वर्ष :: 33 अंक : 07
पृष्ठ : 08 :: मूल्य 2 रुपए मात्र

22वें झारखंड स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं !

मिथिला
वर्णन
स्वच्छ पत्रकारिता, स्वस्थ पत्रकारिता

/mithilavarnan

झारखंड-बिहार का लोकप्रिय हिन्दी साप्ताहिक

बोकारो :: मंगलवार, 15 नवंबर, 2022 News & E-paper : www.varnanlive.com E-mail : mithilavarnan@gmail.com

पूरे परिवार के लिये आध्यात्मिक पत्रिका
अवश्य पढ़ें-

निखिल-मंत्र-विज्ञान
14ए, मैनरोड, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)
फोन : (0291) 2624081, 263809

झारखंड में नये विवाद की बुनियाद !

फैसला...1932 के खतियानी ही होंगे झारखंडी, विस में स्थानीयता व आरक्षण विधेयक पारित

विशेष संवाददाता

रांची: झारखंड की हेमंत सोरेन सरकार ने विधानसभा से 1932 आधारित खतियान के आधार पर स्थानीयता को परिभाषित कर एक नये विवाद की बुनियाद रख दी है। झारखंड विधानसभा से इस विधेयक के पारित होने के साथ ही जहां इसके दायरे में आने वाले लोग जश्न मना रहे हैं, वहीं इसके दायरे से बाहर के लोगों में मायूसी देखी जा रही है। हालांकि, ऐसे लोगों का मानना है कि यह मुद्दा महज एक राजनीतिक स्टंट है, जो सिर्फ वोटबैंक की सियासत का हिस्सा है और यह कानून बन पाना केवल ख्याली पुलाव पकाने जैसा है। जानकारों की मानें तो इस मुद्दे पर राज्य में वर्ग और समुदाय के बीच आपसी टकराव व मनमुटाव की आशंका से इनकार नहीं किया जा सकता। 1932 के खतियान को स्थानीय होने का आधार बनाए जाने के बाद रांची, धनबाद, जमशेदपुर और बोकारो जैसे बड़े शहरों में रहने वाले 75 फीसदी लोग स्थानीय होने की शर्त पूरी नहीं कर पाएंगे और वे बाहरी हो जाएंगे। दरअसल, इन शहरों में लोग रोजी-रोजगार के लिए आये और बसते चले गए। उस समय धनबाद का तो कोई अस्तित्व ही नहीं था। मालूम हो कि वर्ष 1971 में कोयला उद्योग के राष्ट्रीयकरण के पहले यहां खदानों का निजी मालिक हुआ करते थे। उन्होंने ही यूपी और बिहार से खदानों में काम करने के लिए लोगों को बुलाया, जो यहां बसते चले गए। फिर 1952 में सिंदरी उर्वरक कारखाना शुरू होने के बाद यहां काम करने के लिए बाहरी लोग आये और यहीं बस गए। शहरी क्षेत्रों में ऐसे लोगों की संख्या अधिक है।

...फिर 'बैताल' उसी डाल पर

ऑफिस ऑफ प्रॉफिट मामले में मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की विधानसभा सदस्यता पर तलवार लटक रही है। चुनाव आयोग की सिफारिश पर राज्यपाल कभी भी अपना फैसला सुना सकते हैं। इसी सियासी घमासान के बीच महागठबंधन की सरकार ने झारखंड विधानसभा का विशेष सत्र बुलाकर 1932 के खतियान आधारित स्थानीयता और 77 प्रतिशत तक आरक्षण बढ़ाने संबंधी विधेयक पारित कर दिया है। इसके अनुसार झारखंड में अब जिनके पास 1932 या इसके पहले का खतियान होगा, वही झारखंडी माने जाएंगे। विधानसभा से इस विधेयक के पारित होने के बाद पूरे राज्य की बड़ी आबादी में जश्न का माहौल है। लेकिन, जानकारों की मानें तो मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने इन दोनों विधेयकों को विधानसभा से पारित करवाकर एक बड़ा दांव खेला है। क्योंकि, इसे सरजमीन पर उतारने की राह में अब भी कई तकनीकी पेंच मौजूद हैं। दरअसल, वर्ष 2002 में तत्कालीन बाबूलाल मरांडी की सरकार ने भी 1932 के खतियान को आधार बनाकर स्थानीयता परिभाषित की थी, जिसे लेकर पूरे राज्य में एक बड़ा बवाल खड़ा हुआ था। यह मामला अदालत में गया और आगे चलकर पांच जजों की संविधान पीठ ने इसे खारिज कर दिया था। अब मौजूदा सरकार ने फिर से इसे उठाया है। अर्थात फिर बैताल उसी डाल पर बैठ गया, जहां कभी पहले बैठा था

ग्रामसभा से लेना होगा सत्यापन

झारखंड विधानसभा के विशेष सत्र में हेमंत सोरेन सरकार ने 1932 आधारित स्थानीय नीति और आरक्षण संशोधन विधेयक पास करवा लिया। इस विधेयक के अनुसार वे लोग झारखंड के स्थानीय या मूल निवासी कहे जाएंगे, जिनका या जिनके पूर्वजों का नाम 1932 या उससे पहले के खतियान में दर्ज होगा। वहीं, ओबीसी आरक्षण की सीमा 14% बढ़ाकर 27% कर दी गई है। अब झारखंड में कुल 77% रिजर्वेशन हो गया है। अब प्रदेश में अनुसूचित जनजाति (एसटी) को 28 फीसदी, पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) के लिए 27 फीसदी और अनुसूचित जाति (एससी) के लिए 12 फीसदी आरक्षण लागू हो जाएगा। स्थानीयता विधेयक के कानून बन जाने के बाद वैसे लोग, जिनका नाम 1932 खतियान में दर्ज नहीं होगा या फिर जिनका खतियान खो गया हो या नष्ट हो गया हो, ऐसे लोगों को ग्राम सभा से सत्यापन लेना होगा कि वे झारखंड के मूल निवासी हैं या नहीं। भूमिहीन व्यक्तियों के मामले में स्थानीय व्यक्ति की पहचान ग्राम सभा की ओर से संस्कृति, स्थानीय रीति-रिवाज, परंपरा के आधार पर की जाएगी।

1932 स्थानीय नीति के संबंध में विधायक अमित यादव, विनोद सिंह और रामचंद्र चंद्रवंशी ने तीन संशोधन प्रस्ताव पेश किए थे और विधेयक को प्रवर समिति को भेजने का आग्रह किया था। लेकिन, मुख्यमंत्री ने इन तीनों प्रस्तावों पर जवाब देते हुए प्रवर समिति को भेजने से इनकार कर दिया। चर्चा के बाद 1932 खतियान आधारित स्थानीय नीति ध्वनि मद से पास कर दिया गया।

रघुवर सरकार की नीति हुई खारिज

राज्य की पिछली रघुवर दास की सरकार ने जो स्थानीयता की नीति तय की थी, उसे हेमंत सरकार पहले ही खारिज कर चुकी है। क्योंकि, झामुमो के कई नेता और आदिवासी संगठन राज्य में वर्षों से 1932 के खतियान के आधार पर स्थानीयता लागू करने की मांग करते रहे हैं।

कोर्ट के झटके से बचने की कोशिश!

दरअसल, राज्य सरकार इस मामले में कोर्ट के झटके से बचना चाहती है। इसीलिए सरकार इसे नौवीं अनुसूची में डलवाना चाहती है। क्योंकि, बाबूलाल मरांडी के मुख्यमंत्रित्व काल में भी 1932 पर आधारित स्थानीयता नीति बनायी गई थी, जिसे झारखंड हाईकोर्ट ने खारिज कर दिया था। इसलिए राज्य सरकार चाहती है कि इस बार अगर यह कानून बने तो कोर्ट में इसे चैलेंज नहीं किया जा सके। 1932 को लेकर खुद सीएम हेमंत सोरेन सदन में कह चुके हैं कि कानून तो बन जाएगा, लेकिन कोर्ट में यह नहीं ठहरेगा। इसलिए अब इसे नौवीं अनुसूची में डाले जाने का प्रस्ताव केन्द्र को भेजा जाएगा। नौवीं अनुसूची में जिस विधेयक को डाला जाता है, उसे कोर्ट में चैलेंज नहीं किया जा सकता। इसी वजह से हेमंत सरकार ने नौवीं अनुसूची की चाल चली है, ताकि इसे आधार **(शेष पेज-7 पर)**

बहुत कठिन है डगर पनघट की

राज्य की वर्तमान हेमंत सरकार ने 1932 का खतियान आधारित स्थानीयता विधेयक तो पारित करवा लिया, लेकिन इसे कानूनी मान्यता मिलना शायद बहुत ही कठिन है। दरअसल, 14 सितंबर को हेमंत सरकार ने कैबिनेट से 1932 के खतियान पर आधारित नीति को मंजूरी दे दी। इसके बाद 11 नवंबर को विधानसभा के विशेष सत्र में यह विधेयक पास करा लिया गया। नाम दिया गया 'परिणामी सामाजिक, सांस्कृतिक और अन्य लाभों को ऐसे स्थानीय व्यक्तियों तक विस्तारित करने के लिए अधिनियम- 2022'। अब इस विधेयक को राज्यपाल के पास भेजा जाएगा। वैसे तो राज्यपाल से मंजूरी मिलने के बाद सामान्य विधेयक कानून का रूप ले लेते हैं, लेकिन इस विधेयक को राज्यपाल के आगे भी कई पड़ावों से गुजरना होगा। इस विधेयक को संविधान की नौंवी अनुसूची में डालना जरूरी होगा। इसके लिए इसे केन्द्र सरकार के पास भेजा जाएगा। केन्द्र सरकार चाहे तो विधेयक के रूप में लोकसभा में पेश करेगी। लोकसभा में इस विधेयक पर चर्चा होगी। यदि लोकसभा में विधेयक पारित हो गया तो फिर इसे राज्यसभा में भेजा जाएगा। राज्यसभा में विधेयक पर चर्चा होगी। राज्यसभा में विधेयक पारित हो गया तो फिर इसे राष्ट्रपति का अनुमोदन प्राप्त करने के लिए भेजा जाएगा। ...और राष्ट्रपति का अनुमोदन प्राप्त होने के बाद ही इसे नौवीं अनुसूची में डाला जाएगा। तब कहीं जाकर यह कानून प्रभावी हो पायेगा। मतलब साफ है। ऐसा तभी संभव होगा, जब केन्द्र और राज्य सरकार के बीच के तालमेल हो। लेकिन, फिलहाल केन्द्र और राज्य सरकार के बीच जो रिश्ते हैं, उसे पूरा देश जानता है। यदि केन्द्र सरकार राज्य सरकार के इस प्रस्ताव से सहमत हो भी जाय, फिर भी इसे जमीन पर उतारने में लम्बी प्रक्रिया से गुजरना पड़ेगा।

1932 के खतियान में जिसका नाम, उसके वंशज ही स्थानीय

1932 के खतियान को आधार बनाने का मतलब यह है कि उस समय जिन लोगों का नाम खतियान में था, वे और उनके वंशज ही स्थानीय कहलाएंगे। उस समय जिनके पास जमीन थी, उसकी हजारों बार खरीद-बिक्री हो चुकी है। उदाहरण के तौर पर 1932 में अगर रांची जिले में 10 हजार रैयतों थे तो आज उनकी संख्या एक लाख से अधिक तक पहुंच गई। अब तो सरकार के पास भी यह आंकड़ा नहीं है कि 1932 में जो जमीन थी, उसके कितने टुकड़े हो चुके हैं।

सरकारी सुविधाओं से हो जाएंगे वंचित

जानकारों की मानें तो जो लोग वर्षों से झारखंड में रह रहे हैं, लेकिन खतियान में नाम नहीं है, वे कई तरह की सरकारी सुविधाओं से वंचित हो जाएंगे। अर्थात स्थानीय के लिए आरक्षित नौकरी या शैक्षणिक पाठ्यक्रमों में नौकरी के लिए आवेदन नहीं दे पाएंगे। स्थानीय के लिए शुरू होने वाली योजनाओं का लाभ नहीं उठा पाएंगे। अगर सरकार स्थानीयता की परिभाषा तय करते समय खतियान के अलावा दूसरी शर्तें जोड़ती हैं तो वे शर्तें पूरी करने वाले स्थानीय हो सकते हैं।

रघुवर सरकार ने की थी परिभाषित

उल्लेखनीय है कि वर्ष 2002 में जब तत्कालीन मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी ने 1932 के खतियान को आधार बनाने की कोशिश की थी तो पूरे राज्य में विवाद खड़ा हो गया था। वर्षों से एकसाथ रहने वाले लोगों के बीच बाहरी-भीतरी का भेद-भाव खड़ा हो गया था और लोग आपस में मरने-मारने पर उतारू हो गये थे। फिर अर्जुन मुंडा के मुख्यमंत्रित्व काल में सुदेश महतो की अध्यक्षता में तीन सदस्यीय कमेटी बनी, लेकिन इसकी रिपोर्ट पर कुछ नहीं हो पाया। 2014 में मुख्यमंत्री रघुवर दास ने पहली बार स्थानीय नीति को परिभाषित किया। इसमें 1985 से झारखंड में रहने वाले वैसे लोगों को स्थानीय माना गया, जो जमीन खरीदकर यहां बस गए हों या उनके बच्चों ने पहली से मैट्रिक तक की पढ़ाई झारखंड में की हो। अथवा राज्य या केन्द्र सरकार के कर्मचारी हों।

सूचना

झारखंड राज्य स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में 'मिथिला वर्णन' के 07 नवंबर 2022 (रविवार) का अंक 15 नवंबर (मंगलवार) को प्रकाशित किया जा रहा है। अगला अंक 20 नवंबर 2022 (रविवार) को प्रकाशित होगा। - **संपादक।**

- संपादकीय -

फैसले पर उठते सवाल

झारखंड की वर्तमान हेमंत सोरेन सरकार ने विधानसभा का विशेष सत्र बुलाकर राज्य में नई डोमिसाइल नीति लागू किये जाने के फैसले पर अपनी मुहर लगा दी है। सरकार की ओर से शुक्रवार को विधानसभा में रखे गये 1932 के खतियान आधारित स्थानीयता और आरक्षण विधेयक को सदन की मंजूरी मिल गई। सदन में उपस्थित सभी विधायकों और राजनीतिक दलों ने इन दोनों विधेयकों का समर्थन किया। लेकिन, क्या सरकार के ये फैसले लागू हो पाएंगे? इस मुद्दे पर एक नई बहस छिड़ गई है और फैसले पर सवाल भी खड़े होने लगे हैं। दरअसल, झारखंड विधानसभा में शुक्रवार को 1932 के खतियान के आधार पर स्थानीय नीति और ओबीसी, एससी-एसटी के आरक्षण को 12 प्रतिशत से बढ़ाकर 27 प्रतिशद दिये जाने का विधेयक पारित हो गया। इस विधेयक के अनुसार अब झारखंड के स्थानीय निवासी वही माने जाएंगे, जिनका खुद का या पूर्वजों का नाम 1932 या उससे पहले के खतियान में दर्ज होगा। साथ ही ओबीसी का आरक्षण 14 प्रतिशत से बढ़ाकर 27 प्रतिशत कर दिया गया है। एससी को अब 12 प्रतिशत, एसटी को 28 प्रतिशत और आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग को 10 प्रतिशत आरक्षण मिलेगा। लेकिन, ये दोनों विधेयक विधानसभा से पारित हो जाने के बाद भी कानूनी रूप से तब तक न तो मान्य होंगे और न ही ये लागू हो पाएंगे, जब तक इन्हें संविधान की नौवीं अनुसूची में शामिल नहीं कर लिया जायेगा। हालांकि, झारखंड सरकार ने इसे कानूनी अड़चनों से बचाने के लिए यह निर्णय लिया है। लेकिन, जानकारों की मानें तो इसे नौवीं अनुसूची में डालने से पहले लम्बी प्रक्रिया से गुजरना पड़ेगा। पहले तो इन विधेयकों की प्रतियां मंजूरी के लिए राज्यपाल को भेजी जाएंगी। फिर विधि विशेषज्ञों से राय लेने के बाद राज्यपाल इसे मंजूरी देंगे या कोई त्रुटि पाये जाने पर इसे विधानसभा को लौटा भी सकते हैं। अगर राज्यपाल ने इसकी मंजूरी दे दी तो फिर राजभवन के माध्यम से इसे केन्द्र सरकार को भेजा जायेगा। स्थानीयता से संबंधित विधेयक केन्द्रीय गृह मंत्रालय के साथ ही राष्ट्रपति को भी भेजा जायेगा। जबकि, आरक्षण संबंधी विधेयक की स्वीकृति भी राष्ट्रपति ही देंगे और उसके बाद ही नौवीं अनुसूची में शामिल किये जाने की प्रक्रिया पूरी होगी। परन्तु यदि केन्द्र और राज्य सरकार के बीच समन्वय की कमी रही तो यह विधेयक अधर में लटक जायेगा। यही कारण है कि भाजपा और उसके सहयोगी आजसू पार्टी के नेता राज्य की नई स्थानीय और नियोजन नीति को लटकाने, भटकाने और अटकाने वाला बता रहे हैं। इसके साथ ही इस मुद्दे पर कानूनी विवाद भी पैदा होने की संभावना बनी हुई है। क्योकि, इससे पहले बाबूलाल मरांडी के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार ने भी यही निर्णय लिया था, जिसे उच्च न्यायालय से खारिज कर दिया था। इन परिस्थितियों में सरकार के इस फैसले पर सवाल उठने लगे हैं। झारखंड में सत्ताधारी विधायकों के खिलाफ आयकर विभाग और प्रवर्तन निदेशालय द्वारा की जा रही कार्रवाई के बीच राज्य सरकार ने यह ऐतिहासिक फैसला लेकर सियासत को हवा जरूर दे दी है।

आप अपने विचार अथवा अपनी रचनाएं हमें निम्नलिखित ई–मेल पर भेज सकते हैं–
mithilavarnan@gmail.com, Contact : 9431379234
Join us on /mithilavarnan
Visit us on : www.varnanlive.com
(किसी भी कानूनी विवाद का निबटारा केवल बोकारो कोर्ट में ही होगा।)

धरती आबा- जल, जंगल, जमीन के पुरोधा

एक सामान्य गरीब परिवार में जन्म लेकर, अभावों के बीच रहकर भी किसी का भगवान हो जाना कोई सामान्य बात नहीं है, लेकिन मात्र 25 वर्ष के जीवन काल में तमाम अभाव, मानसिक और शारीरिक यातनाओं के बीच अपने बचपन से लेकर भगवान बनने तक की इस यात्रा को बिरसा मुंडा ने पूरा किया। 19वीं सदी के उत्तरार्ध में उन्होंने आदिवासी समाज की दशा और दिशा बदलकर नए सामाजिक युग का सूत्रपात किया तो साथ ही, शौर्य की नई गाथा भी लिखी। आदिवासियों ने भी उन्हें सिर्फ नायक नहीं, बल्कि धरती आबा यानी धरती के पिता के साथ भगवान का दर्जा भी दिया।...

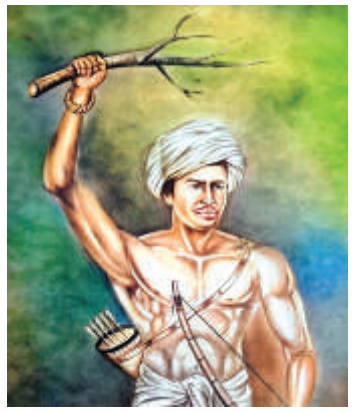

व्यक्तित्व : भगवान बिरसा मुंडा
15 नवंबर, जयंती पर विशेष

जल, जंगल और जमीन को लेकर आदिवासियों का संघर्ष सदियों पुराना है। 19वीं सदी के उत्तरार्ध में भी जब भारत गुलामी का दंश झेल रहा था, इसी संघर्ष के बीच 15 नवंबर 1875 को तब के रांची जिले के उलिहातु गांव में सुगना मुंडा के घर एक बालक का जन्म हुआ। कहते हैं, उस दिन बृहस्पतिवार था, इसलिए बालक का नाम बिरसा रखा गया। घर की स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी, बावजूद इसके पिता ने बिरसा को पढ़ने के लिए मिशनरी स्कूल भेजा। बात 1882 की है। एक तरफ गरीबी थी और दूसरी तरफ अंग्रेजों का लाया इंडियन फॉरेस्ट एक्ट। इस एक्ट का दुरुपयोग कर आदिवासियों से उनके जंगल के अधिकार को छीनने की शुरूआत हुई।

साल 1890 में 15 वर्ष की आयु में अपनी शिक्षा छोड़ने के बाद बालक बिरसा ने समग्र विचारों को विस्तार से समझने का संकल्प किया। इसके बाद आने वाले 5 साल (1890-95 तक) बालक बिरसा ने धर्म, नीति, दर्शन, वनवासी रीति रिवाज, मुंडानी परंपराओं का गहराई से अध्ययन किया। इसके साथ ही ईसाई धर्म और ब्रिटिश सरकार की नीतियों का भी गहराई से अध्ययन किया। अध्ययन के सार रूप में उन्होंने कहा - 'साहब-साहब टोपी एक!' बिरसा ने महसूस किया कि आचरण के धरातल पर आदिवासी समाज अंधविश्वास में फंसा है तो आस्था के मामले में वह भटका हुआ है। धर्म के बिंदु पर आदिवासी कभी मिशनरियों के प्रलोभन में आ जाते हैं तो कभी ढकोसलों को ही ईश्वर मानने लगते हैं। इसके ऊपर था, जमींदारों और ब्रिटिश शासन का शोषण। बिरसा ने तीन स्तरों पर आदिवासी समाज को संगठित किया। पहला, अंधविश्वास और ढकोसलों से दूर होकर स्वच्छता व शिक्षा का रास्ता। दूसरा, सामाजिक स्तर के साथ आर्थिक स्तर पर सुधार। इसके लिए बिरसा ने नेतृत्व की कमान संभाली और ह्यबेगारी प्रथाह्ल के खिलाफ आंदोलन खड़ा किया। तीसरा, राजनीतिक स्तर पर आदिवासियों को अधिकारों को लेकर सजग करना। आदिवासियों को बिरसा मुंडा के रूप में अपना नायक मिला।

बिरसा ने अंग्रेजों द्वारा लागू की गई जमींदारी और राजस्व-व्यवस्था के खिलाफ लड़ाई छेड़ी। बिरसा ने सूदखोर-महाजनों के खिलाफ भी बगावत की। ये महाजन कर्ज के बदले आदिवासियों की जमीन पर कब्जा कर लेते थे। बिरसा मुंडा के निधन तक चला ये विद्रोह 'उलगुलान' नाम से जाना जाता है। अगस्त 1897 में बिरसा ने अपने साथ करीब 400 आदिवासियों को लेकर एक थाने पर हमला बोल दिया। जनवरी 1900 में मुंडा और अंग्रेजों के बीच आखिरी लड़ाई हुई। रांची के पास दूम्बरी पहाड़ी पर हुई इस लड़ाई में हजारों आदिवासियों ने अंग्रेजों का सामना किया, लेकिन तोप और बंदूकों के सामने तीर-कमान जवाब देने लगे। बहुत से लोग मारे गए और कई लोगों को अंग्रेजों ने गिरफ्तार कर लिया। बिरसा पर अंग्रेजों ने 500 रुपये का इनाम रखा था। उस समय के हिसाब से ये रकम काफी ज्यादा थी। कहा जाता है कि बिरसा की ही पहचान के लोगों ने 500 रुपये के लालच में उनके छिपे होने की सूचना पुलिस को दे दी। आखिरकार बिरसा चक्रधरपुर से गिरफ्तार कर लिए गए। अंग्रेजों ने उन्हें रांची की जेल में कैद कर दिया। कहा जाता है कि यहां उनको धीमा जहर दिया गया। इसके चलते 9 जून 1900 को वे शहीद हो गए।

वर्षों तक किताबों के भीतरी पन्नों या फिर क्षेत्र विशेष तक सिमटी रही बिरसा की इस वीरगाथा को याद दिलाते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा था, ''भगवान बिरसा ने समाज के लिए जीवन जिया, अपनी संस्कृति और अपने देश के लिए अपने प्राणों का परित्याग कर दिया। इसलिए, वह आज भी हमारी आस्था में,हमारी भावना में हमारे भगवान के रूप में उपस्थित हैं।''

प्रधानमंत्री मोदी ने 15 नवंबर 2021 को बिरसा मुंडा की शौर्य गाथा का स्मरण कर उनकी याद में पहले संग्रहालय का उद्घाटन किया। साथ ही, इस दिन से पहली बार देश में बिरसा मुंडा की जयंती को जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मनाने की शुरूआत की गई।

- साभार : बीओसी

- हुआ कम क्रिकेट का नशा -

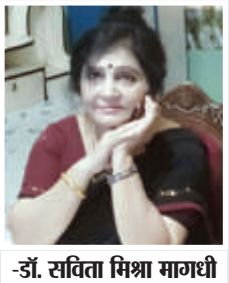

-डॉ. सविता मिश्रा मागधी
बेंगलुरू, मो.- 8618093357

बुरी तरह हारी हमारी
क्रिकेट टीम, इंग्लैंड से,
उत्साह सभी का
मुरझाया,
काम-धाम छोड़ बैठे थे
जो टीवी के सामने,
कहो क्या उन्होंने पाया।

न रन का था कोई
बढ़िया स्कोर, न ही
कोई एक विकेट भी
लुढ़का पाया,
तीसमारखाँ बनने वाला,
क्यों नहीं वर्ल्डकप के
फाइनल में पहुँच पाया।

हर सुविधा संग पाते
करोडों रुपए, फिर
अनफिट का चोला कहाँ
से आया,
नए नवयुवकों को दो
मौका, जिनके रग-रग में
है जीत का मंत्र समाया।

आईपीएल में पैसा
कमाने वाले, भूल गए
वर्ल्डकप जीतने का
मर्म,
बुरी तरह हारकर,
भारतीय पैसा बारकर,
निभा आए असफलता
का धर्म।

क्रिकेटरों के लिए हार-
जीत कोई मायने नहीं
रखती, फिर काहे की
शर्म,
धड़ाधड़ इन क्रिकेटरों
की छटइया हो, तो सभी
समझेंगे वे अपना कर्म।

आईपीएल और सीरीज
नहीं वर्ल्डकप, इससे
जुड़ा है देश का मान,
हारती बस एक टीम
और झुक जाता करोड़ों
क्रिकेट प्रेमियों का
स्वभिमान।

जानते हैं हम सभी,
लगाया होगा उन्होंने भी
जीतने के लिए जी
जान,
इस बुरी तरह मैच में
पिट जाएँगे वे, सपने में
भी न होगा उनको भान।

एक बार तो मौका
दीजिए गाँव के छोरों
को, है जिनमें जोश
समाया,
जिन्हें गाँव के उबड़-
खाबड़ खेत-खलिहानों
ने है, जीत का पाठ
पढ़ाया।

ईश

मानती हूं,
ईश्वर को हमने नहीं देखा
वे अदृश्य हैं।
एकमात्र हमारी कल्पनाओं का
प्रतिबिंबन हैं।
किंतु,
हमारे कठिन क्षणों में
दवा और दुआ जब
असमर्थ हो जाते उस वक्त
हम अपने अंतर्मन से
स्तुति, स्मरण करते हैं
और तब,
उस विह्वलता के क्षण
सकल ब्रह्माण्ड में वह अदृश्य
ईश ही दृष्टिगोचर
और,
एकमात्र हमारे अवलंबन होते हैं।

- सुप्रसन्ना, जोधपुर।

निगम चुनाव की तैयारियां तेज

डीसी-एसपी ने भवनों का लिया जायजा, कोषांग पदाधिकारियों को दिया निर्देश

संवाददाता
बोकारो : नगर निगम चास एवं नगर परिषद फुसरो निर्वाचन को लेकर जिला प्रशासन ने तैयारी शुरू कर दी है। समाहरणालय स्थित कार्यालय कक्ष में जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त कुलदीप चौधरी ने निर्वाचन कार्यों के सफल संचालन को लेकर गठित कोषांगों के नोडल पदाधिकारियों के साथ बैठक की। मौके पर उप विकास आयुक्त कीर्तिश्री, अनुमंडल पदाधिकारी चास दिलीप प्रताप सिंह शेखावत, अनुमंडल पदाधिकारी बेरमो अनंत कुमार, जिला परिवहन पदाधिकारी संजीव कुमार, जिला उप निर्वाचन पदाधिकारी विवेक सुमन आदि उपस्थित थे। उपायुक्त ने नोडल पदाधिकारियों को कहा कि नगर निगम/ नगर परिषद निर्वाचन को लेकर कभी भी अधिसूचना जारी हो सकती है। ऐसे में गठित कोषांग सक्रिय हो जाएं। कोषांग का क्या दायित्व हैं और कैसे दायित्वों का निष्पादन होगा। यह सभी जान लें,किसी भी तरह की कोई लापरवाही नहीं हो यह सुनिश्चित करेंगे। उपायुक्त ने कार्मिक कोषांग के नोडल पदाधिकारी स्थापना उप समाहर्ता मनीषा वत्स को निर्वाचन कार्य के सफल संचालन के लिए कर्मियों का डेटाबेस तैयार करने का निर्देश दिया। प्रशिक्षण कोषांग के नोडल पदाधिकारी सह डीपीएलआर मेनका कुमारी को निर्वाचन कर्मियों के प्रशिक्षण संबंधित प्रारंभिक तैयारी शुरू करने को कहा। वाहन कोषांग के नोडल पदाधिकारी संजीव कुमार से निर्वाचन कार्य के लिए छोटे-बड़े कितने वाहन की जरूरत होगी जानकारी ली। इस पर डीटीओ ने बताया कि लगभग 225 छोटे-बड़े वाहन की आवश्यकता होगी, जो जिले में उपलब्ध है। बैठक में जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त ने सामग्री कोषांग का नोडल पदाधिकारी जिला खाद्य आपूर्ति पदाधिकारी गीतांजलि एवं ईवीएम कोषांग का नोडल पदाधिकारी अपर समाहर्ता सादात अनवर को बनाने का निर्देश दिया।

बैठक में उपस्थित अन्य कोषांग के पदाधिकारियों को भी कोषांग से संबंधित कार्यों पर ध्यान देने को कहा। बैठक में प्रेक्षक कोषांग, स्वीप कोषांग एवं लॉजिस्टिक कोषांग गठित करने का जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त ने संबंधित अधिकारी को निर्देश दिया। मौके पर जिला सूचना विज्ञान पदाधिकारी धनंजय कुमार, जिला शिक्षा पदाधिकारी प्रबला खेस, जिला शिक्षा अधीक्षक नूर आलम, जिला जनसंपर्क पदाधिकारी राहुल भारती, जिला समाज कल्याण पदाधिकारी सत्यबाला सिन्हा, जिला कल्याण पदाधिकारी एस. एक्का आदि उपस्थित थे।

डीसी-एसपी ने चास नगर निगम एवं फुसरो नगर परिषद निर्वाचन कार्य के सफल संचालन को लेकर जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त (डीसी) श्री चौधरी एवं पुलिस अधीक्षक (एसपी) चंदन झा ने ईवीएम डिस्पैच, ईवीएम रिसीविंग एवं काउंटिंग कार्य को लेकर विभिन्न भवनों का निरीक्षण किया। सेक्टर- 3 स्थित सीनियर सेकेंडरी हाई स्कूल को ईवीएम डिस्पैच सेंटर व सामग्री कोषांग संचालन को लेकर चिन्हित किया। वहीं, बाजार समिति चास स्थित गोदामों को ईवीएम रिसीविंग एवं काउंटिंग के लिए चिन्हित किया। संबंधित अधिकारियों को दिशा-निर्देश भी दिया। इससे पूर्व सेक्टर आठ, सेक्टर 11 स्थित विद्यालय भवनों का भी निरीक्षण किया।

डीवीसी की उन्नति को एकजुटता जरूरी : दत्ता

निवर्तमान परियोजना प्रधान की प्रोन्नति के बाद सुनील पांडेय ने पदभार संभाला

संवाददाता
बोकारो : दामोदर घाटी निगम (डीवीसी) चंद्रपुरा ताप विद्युत केंद्र के मुख्य अभियंता और परियोजना प्रधान अजय कुमार दत्ता की पदोन्नति और कोलकाता तबादले के बाद मुख्य अभियंता एवं परियोजना प्रधान सुनील कुमार पांडेय ने चंद्रपुरा के मुख्य अभियंता एवं परियोजना प्रधान का पदभार ग्रहण कर लिया। सीटीपीएस की इकाई 7-8 के सम्मेलन कक्ष में श्री दत्ता की विदाई और श्री पांडेय का स्वागत समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अभियंता एवं परियोजना प्रधान अजय कुमार दत्ता ने कहा कि चंद्रपुरा की इकाई ने पिछले माह में बिजली उत्पादन के क्षेत्र में कई रिकॉर्ड बनाया था। उस रिकॉर्ड को अब तोड़ना भी हम सभी की जिम्मेदारी है। डीवीसी को और ऊंचाई पर ले जाने के लिए सभी को एकजुट होकर काम करना होगा। वर्तमान मुख्य अभियंता व परियोजना प्रधान सुनील कुमार पांडेय ने श्री दत्ता के कार्यकाल की प्रशंसा की।

समारोह को मुख्य अभियंता देवव्रत दास, पीके मिश्रा, उप महाप्रबंधक प्रशासन टीटी दास, उप मुख्य अभियंता एसके शर्मा, पीसी साहू, केके सिंह, संजय कुमार, मुकुंद कुमार सिंह, सुजीत कारक, एस. भट्टाचार्जी, पीके झा, निक्कू कुमारी, के एम प्रियदर्शी, दिलीप कुमार, मो. इम्तियाज, प्रदीप कुमार श्रीवास्तव, बादल महली, अक्षय कुमार आदि ने भी संबोधित किया।

सराहनीय एंटी ब्राइबरी मैनेजमेंट सिस्टम से प्रमाणित पहला महारत्न सार्वजनिक उपक्रम बनी

सेल में रिश्वतखोरी की कोई जगह नहीं

संवाददाता
बोकारो : स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (सेल) एंटी ब्राइबरी मैनेजमेंट सिस्टम (एबीएमएस) को लागू करने का गौरव हासिल करने वाली सार्वजनिक क्षेत्र की पहली महारत्न इकाई बन गई है। एबीएमएस एक प्रबंधन प्रणाली है, जिसे आईएसओ 37001:2016 के अनुरूप बनाया गया है, ताकि संगठन को रिश्वतखोरी को रोकने, उसका पता लगाने और उस पर कार्रवाई करने में मदद मिल सके। हाल ही में सेल के सतर्कता जागरूकता सप्ताह के दौरान आयोजित समापन समारोह में भारतीय मानक ब्यूरो (बीआईएस) ने सेल को आईएस अथवा आईएसओ 37001:2016 के अनुसार एबीएमएस प्रमाणपत्र प्रदान किया।

इस अवसर पर केंद्रीय सतर्कता आयोग (सीवीसी) में सतर्कता आयुक्त, पीके श्रीवास्तव, सेल अध्यक्ष सोमा मंडल, सेल के मुख्य सतर्कता अधिकारी विनीत पांडे और सीवीसी, बीआईएस एवं सेल के अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण उपस्थिति रहे। सेल के नई दिल्ली स्थित कॉर्पोरेट ऑफिस और सेल के झारखंड में स्थित बोकारो स्टील प्लांट को एबीएमएस सर्टिफिकेट में प्रदान किया गया।

सेल की योजना अपने अन्य संयंत्रों और इकाइयों में चरणबद्ध तरीके से एबीएमएस को लागू करने की है।

डीआई ने दिलाई गुणवत्ता की शपथ

बोकारो इस्पात संयंत्र में विश्व गुणवत्ता दिवस दिवस मनाया गया। इस अवसर पर इस्पात भवन परिसर में आयोजित एक कार्यक्रम में बीएसएल के निदेशक प्रभारी अमरेन्दु प्रकाश ने गुणवत्ता ध्वज फहराया और उपस्थित समूह को गुणवत्ता शपथ दिलाई। इस कार्यक्रम में अधिशासी निदेशक बीके तिवारी, संजय कुमार, चितरंजन महापात्रा व जे. दासगुप्ता, चीफ मेडिकल ऑफिसर प्रभारी (चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाएं) डॉ. बीबी करुणामय सहित विभिन्न विभागों के मुख्य महाप्रबंधक, विभागाध्यक्ष, अन्य वरीय अधिकारी एवं कर्मी उपस्थित थे। अपने उद्बोधन में निदेशक प्रभारी ने गुणवत्ता के महत्व को रेखांकित करते हुए गुणवत्ता को प्राप्त करने के लिए न केवल संयंत्र की कार्यप्रणालियों, बल्कि जीवन के हर क्षेत्र में विवेकपूर्ण निर्णय लेने का संदेश दिया। इस वर्ष विश्व गुणवत्ता दिवस दिवस का केन्द्रीय विषय क्वालिटी कन्सायन्स-डूइंग द राइट थिंग तय किया गया है तथा नवम्बर माह गुणवत्ता माह के रूप में मनाया जा रहा है।

भ्रष्टाचार में आकंठ डूबी है हेमंत सरकार : अमर

संवाददाता
चंदनकियारी : राज्य सरकार द्वारा बोकारो जिले के चंदनकियारी व चास प्रखंड को सूखाग्रस्त क्षेत्र की सूची से बाहर रखने के विरोध में भारतीय जनता पार्टी की चंदनकियारी इकाई की ओर से प्रखंड कार्यालय का घेराव किया गया। यहां हल-बैल व ट्रैक्टरों के साथ भाजपा कार्यकर्ता व क्षेत्र के किसान स्थानीय सुभाष चौक से राज्य सरकार के विरोध में नारा लगाते हुए रैली की शक्ल में प्रखंड कार्यालय पहुंचे। कार्यक्रम का नेतृत्व करते हुए स्थानीय विधायक व झारखंड सरकार के पूर्व मंत्री अमर कुमार बाउरी ने कहा कि राज्य की हेमंत सरकार भ्रष्टाचार में आकंठ डूब चुकी है। इस सरकार को आमजन व किसानों की समस्याओं से कोई सरोकार नहीं है। यही वजह है कि राज्य की वर्तमान हेमंत सरकार ने चंदनकियारी एवं चास प्रखंड जैसे सुदूरवर्ती ग्रामीण व कृषि पर आधारित जीविका चलाने वाले लोगों की बहुलता वाले क्षेत्रों को सूखाग्रस्त की सूची से बाहर रख दिया है। जबकि, क्षेत्र में सिर्फ मानसून के भरोसे होने वाली एकमात्र फसल धान की रोपनी भी अनावृष्टि के कारण इस बार नहीं हो पायी। उन्होंने कहा कि सरकार की इस किसान विरोधी नीति के विरुद्ध भाजपा सड़क से सदन तक आंदोलन करेगी, ताकि क्षेत्र के खेतिहर मजदूर व किसानों को न्याय दिलाया जा सके।

श्री बाउरी ने कहा कि राज्य सरकार के इशारे पर ही राज्य में अधिकारी व कर्मचारी बेलगाम हो चुके हैं और उन्होंने लूट मचा रखी है, जिसकी छूट इस सरकार ने दे रखी है। उन्होंने कहा, मुख्यमंत्री के कई शागिर्द भ्रष्टाचार के आरोप में जेल की सलाखों में है, अब उनकी ही बारी है। मौके पर प्रमुख निवारण सिंह चौधरी, उपप्रमुख पदमा बाउरी, भाजपा नेता अंबिका खवास, जयदेव राय, विनोद गोराई, फटिक दास, गौर रजवार, रमन महथा, निमाई महथा, मिहिर बाउरी, विभाष महतो आदि मौजूद रहे।

पुलिस की नाक के नीचे लफंगई... पुलिस क्लब के समीप आए दिन होती है मारपीट

बदमाशों का अड्डा बना सिटी सेंटर

संवाददाता

बोकारो : बोकारो इस्पात नगर के सेक्टर- 4 स्थित सिटी सेंटर में पुलिस क्लब के निकट का मार्केट इन दिनों लंपटों का अखाड़ा बन चुका है। यहां शाम ढलते ही बड़ी संख्या में जमा होने वाले मनचले लड़कों द्वारा लड़कियों के साथ छेड़खानी की घटनाएं आम बात हो गई है। इसी क्रम में स्कूली छात्रों और मनचले युवकों के बीच मारपीट की घटनाएं अक्सर होती ही रहती हैं। आसपास के दुकानदार इन बढ़ती घटनाओं से परेशान हैं। रविवार की संध्या लगभग 6.30 बजे इसी मार्केट में छात्रों के दो गुटों में जमकर मारपीट की घटना हुई, जिसमें दर्जनों छात्र घायल हो गए। आसपास के लोगों ने बताया कि देखते ही देखते अचानक कुछ छात्र डंडे हॉकी स्टिक से लैस होकर दूसरे गुट के छात्रों पर टूट पड़े और बगल की झाड़ियों में सड़कों पर और गलियों में भी खदेड़-खदेड़कर उन्हें बेरहमी से पीटा। आसपास के मकानों में चलने वाले अवैध हॉस्टलों से सैकड़ों की संख्या में लड़कों का हुजूम घातक हथियारों से लैस होकर देखते ही देखते टूट पड़ा। ये लड़के अपने साथियों को मोबाइल से घटना की सूचना देते हुए उन से जुटने की अपील कर रहे थे। कोई लहूलुहान था, तो कोई दौड़-दौड़ कर भाग रहा था। किसी का चश्मा टूटा, तो किसी को गहरी छोटे आईं। इसी दौरान मौके पर मौजूद लोगों ने घटना की सूचना स्थानीय पुलिस को दी और थाना प्रभारी अजय प्रसाद ने चंद मिनटों के ही अंदर वहां पेट्रोलिंग पार्टी भेज दी। पुलिस ने चीरा चास के एक लड़के को अपनी हिरासत में लिया ही था कि देखते ही देखते भीड़ तितर-बितर हो गई और सभी लड़के वहां से खिसक गए। आसपास के लोगों ने बताया कि इस मार्केट के मकान मालिकों द्वारा अवैध रूप से काफी संख्या में हॉस्टल चलाए जाते हैं, जहां लड़के और लड़कियां भी रहती हैं। इसके साथ ही इस क्षेत्र में बड़ी संख्या में कोचिंग इंस्टिच्यूट भी चलते हैं, जहां पढ़ने के नाम पर सैकड़ों छात्र-छात्राएं प्रतिदिन जुटते हैं। इनके बीच छेड़खानी की घटनाएं भी अक्सर होती रहती हैं।

पुलिस पिकेट बनाने की मांग

सबसे दुखद यह है कि इस व्यस्ततम इलाके में आज तक कोई पुलिस पिकेट की स्थापना नहीं की जा सकी है। बगल में पुलिस क्लब रहते हुए भी आसपास में पुलिस बल की संख्या नदारद रहती है। वहां सुरक्षा का कोई भी इंतजाम नहीं है। प्राप्त जानकारी के अनुसार शहर में पुलिस बल की संख्या भी इन दिनों काफी कम है। स्थानीय लोगों ने बोकारो के पुलिस अधीक्षक से स्थिति की गंभीरता को देखते हुए पुलिस क्लब के आसपास एक पुलिस पिकेट स्थापित करने की मांग की है, ताकि मार्केट में आने तथा वहां रहने वाले लोगों में सुरक्षा व्यवस्था उपलब्ध हो हो सके।

ट्रांसपोर्टिंग से उड़ने वाली धूल से लोगों एवं वाहन मालिकों को परेशानी

बोकारो थर्मल : बोकारो थर्मल थाना क्षेत्र अंतर्गत सीसीएल गोविंदपुर-स्वांग ओपन कास्ट के फेज-2 से आउटसोर्सिंग के तहत कोयला उत्पादन एवं ट्रांसपोर्टिंग का कार्य करनेवाली कंपनी के कोयला ढ़ोने वाले हाईवा के कारण उड़नेवाली धूल से लोगों एवं दोपहिया वाहन चालकों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। सीसीएल गोविंदपुर-स्वांग ओपन कास्ट से छिलका पुल तक के सड़क मार्ग का

ज्यादातर हिस्सा कच्चा रहने के कारण कोयला लदे भारी वाहनों की आवाजाही से काफी मात्रा में धूल उड़ते हैं, जिससे गैरमजरुवा, गोमिया, स्वांग, हजारी आनेवाले लोगों एवं दो पहिया वाहन चालकों को प्रदूषण का सामना करना पड़ता है। उड़ने वाली धूल से अंधेरा छा जाता है और दुघर्टना की संभावना भी बनी रहती है। गैरमजरुवा गांव के रमेश प्रजापति, बालमुकुंद प्रजापति, गब्बर राम आदि ने सीसीएल प्रबंधन से उक्त सड़क मार्ग पर परस्पर तरीके से जल छिड़काव की मांग की है।

आयोजन कसमार में 'आपकी योजना आपकी सरकार आपके द्वार' कार्यक्रम मे शामिल हुए सचिव

लोगों तक सरकार की कल्याणकारी योजनाएं पहुंचाना उद्देश्य : सुनील कुमार

संवाददाता

बोकारो : जिले में आपकी योजना आपकी सरकार आपके द्वार कार्यक्रम का आयोजन विभिन्न पंचायतों में किया गया। इसी क्रम में कसमार प्रखंड अंतर्गत बरईकलां पंचायत में कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें गोमिया विधायक लंबोदर महतो, कार्यक्रम के जिला नोडल पदाधिकारी सह सचिव पथ निर्माण/भवन निर्माण विभाग सुनील कुमार, उपायुक्त कुलदीप चौधरी शामिल हुए। मौके पर उप विकास आयुक्त कीर्तिश्री जी., जिला परिषद उपाध्यक्ष बबीता कुमारी, जिला परिवहन पदाधिकारी संजीव कुमार, कार्यक्रम की प्रखंड नोडल पदाधिकारी मनीषा वत्स, प्रखंड प्रमुख, सांसद प्रतिनिधि, प्रखंड विकास पदाधिकारी विजय कुमार, अंचलाधिकारी प्रदीप शुक्ला आदि मौजूद रहे। अपने संबोधन में गोमिया विधायक लंबोदर महतो ने आपकी योजना आपकी सरकार आपके द्वार कार्यक्रम को आमजनों के लिए अच्छा कार्यक्रम बताया। मौके पर कार्यक्रम के जिला नोडल पदाधिकारी सह सचिव पथ निर्माण/भवन निर्माण विभाग सुनील कुमार ने कहा कि आमजनों की सहूलियत के लिए आपकी योजना आपकी सरकार आपके द्वार कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। जिले में आवेदन प्राप्त होने का प्रतिशत 11 है, जो बेहतर हैं। सरकार का इस कार्यक्रम के पीछे की मंशा छूटे हुए लोगों को कल्याणकारी योजनाओं से जोड़ना उन्हें लाभ पहुंचाना है।

शिविर में विभिन्न विभागों से संबंधित 20-22 कल्याणकारी योजनाओं से आमजनों को अच्छादित करने का काम किया जा रहा है। शिविर में ऑन स्पॉट मामले निष्पादित किए जा रहे हैं। आवेदकों का ऑन लाइन निबंधन किया जा रहा है। इससे मामलों पर अग्रेतर कार्रवाई (मानिटरिंग) भी की जा रही है। जिले में आपकी योजना आपकी सरकार आपके द्वार कार्यक्रम में प्राप्त आवेदन व निष्पादित आवेदनों का प्रतिशत संतोषजनक है, उन्होंने इस पर प्रसन्नता व्यक्त की।

सचिव ने राष्ट्रीय राजमार्ग स्थित पीडब्ल्यूडी गेस्ट हाउस के जीर्णोद्धार करने, लुगुबुरू घंटाबाड़ी धोरोमगढ़ को रजरप्पा से जोड़ने वाली सड़क निर्माण का सर्वे करने, बहादुरपुर, चतरोचट्टी आदि सड़क निर्माण को जल्द शुरू करने की बात कहीं। इस क्रम में सभी विभागों द्वारा लगाए गए स्टालों का अधिकारियों ने जायजा लिया। अतिथियों ने ऑन द स्पॉट स्वीकृत लाभुकों के बीच पेंशन, पीएम आवास, दिव्यांग किट्स, क्रेडिट लिंकेज, कंबल आदि सरकारी योजनाओं के परिसंपत्ति/स्वीकृति पत्र को भी वितरित किया।

हफ्ते की हलचल

डीपीएस बोकारो में फैन्सी ड्रेस प्रतियोगिता संपन्न

बोकारो : गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ-साथ बच्चों में कलात्मक व रचनात्मक गुणों के विकास को लेकर दिल्ली पब्लिक स्कूल (डीपीएस) बोकारो की प्राइमरी इकाई में चार-दिवसीय फैन्सी ड्रेस प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतिभागी नन्हे छात्र-छात्राओं ने डॉक्टर, ग्वाला, सब्जी-विक्रेता, पुलिसकर्मी, फायर फाइटर, शेर, बाघ, चीता, हाथी, पेंग्विन, स्टार फिश, जादूगर, जोकर, स्पाइडरमैन, बालाजी, राम, हनुमान कृष्ण, शिव, दुर्गा आदि देवी-देवताओं के वेश में अपनी प्रस्तुतियों से सबकी भरपूर सराहना बटोरी। अपने मासूमियत भरे अंदाज में बच्चों की अदाकारी और तोतली जुबान में उनका संवाद-प्रेषण लुभावने बने रहे। इस क्रम में बच्चों के अभिभावकों ने भी अपनी रंगारंग प्रस्तुतियां दीं। प्राचार्य ए. एस. गंगवार ने कहा कि इस प्रकार के आयोजनों से बच्चों की प्रतिभा विकसित होती है। इनमें प्रतिभागिता महत्वपूर्ण है।

साक्षी को क्षेत्रीय शास्त्रीय गायन में मिला प्रथम पुरस्कार

बोकारो : केन्द्रीय विद्यालय नंबर-1, बोकारो के कक्षा 12 की छात्रा साक्षी रंजन ने रांची में आयोजित संभाग (जोनल) स्तरीय शास्त्रीय संगीत (गायन) प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त कर बोकारो का मान बढाया है। बोकारो के प्रसिद्ध तबला वादक डॉ राकेश रंजन की सुपुत्री साक्षी रंजन ने केन्द्रीय विद्यालय, नामकुम, रांची में 5 नवम्बर 2022 को आयोजित राष्ट्रीय एकता पर्व सह कला उत्सव-2022- 23 के तहत जोनल स्तरीय शास्त्रीय संगीत (गायन) प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। केंद्रीय विद्यालय रांची संभाग (जोन) के उपायुक्त डी.पी.पटेल ने विजेता साक्षी को पुरस्कृत किया। साक्षी की इस उपलब्धि पर उसके विद्यालय सहित बोकारो के संगीत जगत से जुड़े लोगों ने उसे बधाई दी है और उसके उज्जवल भविष्य की कामना की है।

मानव की सेवा ही जीवन का सर्वोत्तम कार्य : संजय बैद

बोकारो : रोटरी चास ने सुनता पंचायत के काशी टांड टोला में जरूरतमंदों को निःशुल्क कपड़े एवं अन्य जरूरत के सामान का वितरण किया। अध्यक्ष नरेंद्र सिंह ने कहा कि विषम परिस्थितियों में रहने वालों को सर्दियों में मदद करनी चाहिए। रोटरी चास के संस्थापक अध्यक्ष संजय बैद ने कहा कि मानव की सेवा ही जीवन का सर्वोत्तम कार्य की उक्ति पर रोटरी चास कार्य कर रही है। साथ ही पुराने कपड़ों का सदुपयोग करने अन्य लोगों को भी कार्यक्रम के माध्यम से प्रेरित कर रही है। कार्यक्रम के संयोजक विनय सिंह ने कहा कि पुराने, लेकिन प्रयोग में करने योग्य कपड़े उपलब्ध करा रोटरी चास ने लगभग एक सौ परिवारों को राहत पहुंचाने में सफल रही। पूर्व अध्यक्ष अमन मल्लिक ने कहा कि रोटरी चास समाज की अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति के प्रति भी संवेदनशील है। रोटरी चास की सचिव पूजा बैद ने प्रयोग योग्य पुराने वस्त्रों के सहयोग में मदद करने वाले सभी लोगों के प्रति आभार जताया।

गुजराती धर्मशाला में मोतियाबिंद जांच शिविर आयोजित

बोकारो : जरीडीह बाजार स्थित गुजराती स्कूल धर्मशाला में स्व. गुणवंती बेन कांतिलाल मेहता की पुण्यतिथि के अवसर पर पुत्र सुबोध मेहता के द्वारा निशुल्क मोतियाबिंद ऑपरेशन जांच शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का उद्घाटन गिरीश भाई कोठरी, अखिल भारतीय अग्रवाल कल्याण महासभा के प्रदेश अध्यक्ष अनिल अग्रवाल, हाजी ए. आर. मेमोरियल आंख अस्पताल कथारा के डॉ. आरोफिल शेख, सुबोध मेहता ने संयुक्त रुप से फीता काटकर किया। जिला अंधापन नियंत्रण समिति के तहत हाजी ए.आर. मेमोरियल अस्पताल कथारा के डॉ. आरोफिल शेख और डॉ. मेहराब सहित उनकी टीम द्वारा लगभग 250 लोगों के नेत्रों की जांच की गई। इसमें 110 मोतियाबिंद से ग्रसित रोगियों को चिह्नित कर अगले दिन उनका मुफ्त आपरेशन किया गया।

30 करोड़ रु. से बदलेगी लुगुबुरु घंटाबाड़ी की सूरत

संतालियों के धर्म महासम्मेलन में मुख्यमंत्री ने की घोषणा, म्यूजियम, सीता झरना, कला-संस्कृति भवन के निर्माण सहित सौंदर्यीकरण के होंगे कई काम

सियासत भी... हम प्रकृति के पुजारी, कुछ लोग राज्य को अस्थिर करना चाह रहे

समारोह के दौरान सियासत की बातें भी हुईं। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने अप्रत्यक्ष रूप से भाजपा पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि राज्य बनने के 21 वर्ष बाद भी किसी सरकार ने 1932 खतियान लागू नहीं किया, हमने यहां के लोगों को अधिकार दिलाने के लिए ठोस कदम उठाया है। कहा कि झारखंड पहला राज्य है, जहां सरना धर्म कोड पारित कर केंद्र को भेजा गया है। आदिवासियों के उत्थान के लिए भी सरकार काम कर रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमलोग प्रकृति के पुजारी हैं, इसकी रक्षा हमारा कर्तव्य है। कुछ लोग राज्य को अस्थिर करना चाहते हैं, इसलिए विभिन्न हथकंडे से सरकार को अस्थिर करने का प्रयास कर रहे हैं। ऐसे लोग विफल होंगे। उन्होंने कहा कि आदिवासी अपने बच्चों को पढ़ाएं और आगे बढ़ाएं। समाज के मेधावी बच्चों को हमलोग सरकारी खर्च पर विदेश तक पढ़ाने के लिए भेज रहे हैं। कहा कि संथाल आदिवासियों की पहचान राष्ट्रीय स्तर पर बनाने की जरूरत है। पिछड़ा, दलित व अल्पसंख्यक भी अपने बच्चों को आईएएस, आईपीएस, इंजीनियर, जज, वकील बनाने के साथ ही बेहतर व्यवसाय से जोड़ें। इसके पूर्व, अपने स्वागत भाषण में उपायुक्त कुलदीप चौधरी ने महासम्मेलन में की गई प्रशासनिक व्यवस्था पर प्रकाश डाला। मौके पर गोमिया विधायक लंबोदर महतो, उप महानिरीक्षक (कोयला प्रक्षेत्र) कन्हैया लाल मयूर पटेल, पुलिस अधीक्षक चंदन झा, पूर्व विधायक योगेंद्र प्रसाद महतो, जिला परिषद अध्यक्षा सुनीता देवी, डीडीसी कीर्तिश्री जी., अपर समाहर्ता सादात अनवर, लुगूबुरु घंटाबाड़ी धोरोगाढ़ आयोजन समिति के अध्यक्ष बबुली सोरेन समेत जिला स्तरीय पदाधिकारी, /प्रखंड स्तरीय अधिकारी, कर्मी व आयोजन समिति सदस्य, श्रद्धालु आदि उपस्थित थे।

सांस्कृतिक विरासत बचाकर समाज को बनाएं मजबूत : मुख्यमंत्री

संवाददाता

बोकारो : बोकारो जिले के गोमिया प्रखंड अंतर्गत संतालियों के प्रमुखतम धर्म-स्थल लुगुबुरू घंटाबाड़ी धोरोमगढ़ का धर्म महासम्मेलन उत्साहपूर्ण वातावरण में संपन्न हो गया। इसमें मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने भी पहुंचकर सपत्नीक पूजा-अर्चना की। 22वें अंतरराष्ट्रीय धर्म सम्मेलन में अपनी पत्नी कल्पना सोरेन के साथ उन्होंने लुगू बाबा की पूजा अर्चना की और राज्य की उन्नति, सुख-समृद्धि, शांति-सद्भाव व खुशहाली की कामना की। मुख्यमंत्री ने यहां स्थापित भगवान बिरसा मुंडा की प्रतिमा पर भी माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि लुगूबुरु धर्मगढ़ के विकास के लिए 30 करोड़ खर्च किए जाएंगे। इसमें 11 करोड़ से म्यूजियम सहित मंदिर का सौंदर्यीकरण, सीता झरना का विकास, कला संस्कृति भवन निर्माण होगा। उन्होंने कहा कि हमें अपने सामाजिक और सांस्कृतिक विरासत को बचाते हुए समाज को मजबूत बनाना है। समाज के गठन में पूर्वजों ने जो प्रयास किया उसे हमें मिलकर आगे बढ़ाना है। हमारा जन्म अगर समाज में हुआ है तो हमारी जिम्मेदारी है कि हम समाज को मजबूत बनाने में अपनी भूमिका अदा करें। गुरुजी शिबू सोरेन ने सामाजिक व्यवस्था में सुधार को लेकर जो आंदोलन किया था, उसे भी हमें आगे बढ़ाने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि कहा कि आदिवासी बहुल गांव में जनजातीय परंपराओं को बनाए रखने के लिए भवन बनाने की योजना सरकार बना रही है । यहां मानकी, मुंडा, परगनैत, मांझी शासन व्यवस्था का संचालन बेहतर तरीके से हो सकेगा। उन्होंने कहा कि आदिवासी समुदाय के सभी पूजा स्थलों- सरनास्थलों की घेराबंदी की जाएगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि वैश्विक महामारी कोरोना की वजह से 2 सालों तक पूरी दुनिया की सारी व्यवस्थाएं ठप हो गई थी। इस वजह से कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर लुगु बाबा के दरबार में पूजा अर्चना करने हेतु श्रद्धालु नहीं आ सके थे। लेकिन, इस बार लुगू बाबा के दर्शन और आराधना के साथ अंतरराष्ट्रीय संताल सरना महासम्मेलन में देश - विदेश से लाखों की संख्या में उमड़ी श्रद्धालुओं की भीड़ यह बताने के लिए काफी है कि उनमे लुगू बाबा के प्रति कितनी आस्था है। हम विरासत में मिली इस परंपरा, रीति - रिवाज को और मजबूत करने के साथ आगे ले जाने का संकल्प लें। कम शिक्षित होने की वजह से आदिवासी समुदाय अपने हक और अधिकार से वंचित रह जाता है। आदिवासी समाज को आर्थिक, सामाजिक और शैक्षणिक समेत हर दृष्टिकोण से मजबूत होना होगा। उन्हें अपने हक और अधिकार के लिए जागरूक होना पड़ेगा, तभी वे आगे बढ़ सकते हैं ।आदिवासी समाज सशक्त और जागरूक होगा तो उनकी आने की पीढ़ी तरक्की के नए आयाम स्थापित करेगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि आदिवासी, दलितों और अन्य वंचित वर्गो और तबकों के विकास के लिए सरकार लगातार प्रयास कर रही है।

सीएम ने कहा कि सरकार कई जनकल्याणकारी योजनाएं चला रही हैं। आप सभी इन योजनाओं से जुड़े और लाभ लें। आप आगे बढ़ेंगे तो समाज और राज्य भी आगे बढ़ेगा।

केंद्र को अपनी जिम्मेदारी नहीं सौंपे राज्य सरकार : डॉ. लंबोदर

गोमिया विधायक ने दिया धरना, सदन में लाया संशोधन प्रस्ताव

संवाददाता

बोकारो : गोमिया विधायक डॉ. लंबोदर महतो ने झारखंड विधानसभा के विशेष सत्र के दौरान विधानसभा परिसर में धरना दिया। उन्होंने धरना के क्रम में कहा कि राज्य सरकार अपनी जिम्मेदारियों को केंद्र सरकार को नहीं सौंपे। पहले स्थानीय नीति और एससी, एसटी व ओबीसी आरक्षण को राज्य में लागू करे, फिर नौंवी अनुसूची में शामिल करने का प्रस्ताव केंद्र को दे। इस क्रम में उन्होंने कहा कि 1932 खतियान आधारित स्थानीय नीति और एससी, एसटी व ओबीसी आरक्षण वृद्धि का प्रस्ताव आजसू पार्टी के संघर्ष का परिणाम है।

उन्होंने कहा कि झारखंड में 1932 के खतियान आधारित स्थानीय नीति और और एससी, एसटी व ओबीसी आरक्षण में वृद्धि का विधेयक विधानसभा में आ रहा है। निश्चित रूप से सरकार के निर्णय का हम स्वागत करते हैं, लेकिन कहीं न कहीं सरकार की नीयत और नीति में थोड़ी खोट है। सरकार जो विधेयक ला रही है उस विधेयक में यह प्रस्ताव है कि यह विधेयक तब लागू होगा जब केंद्र की नौवीं अनुसूची में शामिल हो जाएगा।

उन्होंने कहा कि आजसू पार्टी की मांग व झारखंड की साढ़े तीन करोड़ लोगों की आवाज है तथा उनके संघर्ष के परिणाम के स्वरूप यह विधेयक सरकार ला रही है। पहले सरकार को चाहिए कि दोनों विधायक को राज्य में लागू करें। फिलहाल कहीं न कहीं राज्य की जनता को सरकार दिग्भ्रमित कर रही है। उन्होंने कहा - इसे लेकर हम सदन में आवाज उठाएंगे और हमने संशोधन प्रस्ताव भी डाला है।

अफसरों की अनदेखी के कारण सुविधाओं को तरस रहे कर्मी : सपन

बोकारो : स्थानीय सिटी पार्क में झारखण्ड राज्य चतुर्थवर्गीय सरकारी कर्मचारी संघ, जिला शाखा-बोकारो की बैठक संघ के जिला अध्यक्ष पशुपति नायक की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। संघ के जिला सचिव प्रेमशंकर राम ने सभी आगत साथियों का स्वागत करते हुए झारखण्ड राज्य चतुर्थवर्गीय सरकारी कर्मचारी संघ, जिला शाखा - बोकारो के सांगठनिक गतिविधियों से अवगत कराया। बैठक में चतुर्थवर्गीय सरकारी कर्मियों की समस्याओं तथा परेशानियों के निदान पर विस्तार से चर्चा की गई। मुख्य रूप से उपस्थित झारखण्ड राज्य चतुर्थवर्गीय सरकारी कर्मचारी संघ के प्रदेश महामंत्री सपन कुमार कर्मकार ने कहा कि अविभाजित बिहार से अलग होकर झारखण्ड राज्य बनने के पश्चात राज्य निर्माण हुए 22 वर्षों में भी राज्य के चतुर्थवर्गीय कर्मियों को पद प्रोन्नति की सुविधा प्रदान नहीं की जा सकी। अफसरों की अनदेखी से ऐसे कर्मी सुविधाओं से वंचित हैं।

125 गांवों के लोगों ने की सवा करोड़ पार्थिव शिवलिंग की पूजा, 'हर-हर महादेव' के जयघोष से गूंजा सभागाछी इलाका

मधुबनी : ऐतिहासिक महत्ता वाले मधुबनी जिलांतर्गत सौराठ सभागाछी एक बार फिर राष्ट्रीय स्तर पर सुर्खियों में रहा। वजह रही एक दिन में सवा करोड़ पार्थिव शिवलिंग की पूजा। वर्षों से मैथिल समाज के वर-वधु की युक्ति स्थल के रूप में प्रसिद्ध इस सभा गाछी में विश्व कल्याण, प्रकृति एवं सभी प्राणियों में शांति बनाए रखने की कामना को लेकर

इस विशेष पूजा का आयोजन किया गया। इसमें 125 गांवों के लोग शामिल हुए। प्राप्त जानकारी के अनुसार पार्थिव शिवलिंग को 15 ट्रेलर मिट्टी और गंगाजल से तैयार किया गया था। आयोजकों ने बताया कि मिथिला में आजतक ऐसा आयोजन नहीं हो सका था। इसके साथ भव्य एकदिवसीय मेला का भी आयोजन किया गया। इसमें भारी संख्या में लोग शामिल हुए। मधुबनी जिला प्रशासन की ओर से लोगों की सुरक्षा का भी व्यापक प्रबंध इस क्रम में किया गया। इसके साथ ही माधवेश्वर नाथ मंदिर के गर्भगृह में रुद्राभिषेक एवं सवा लाख महामृत्युंजय का जाप भी किया गया। पूजा के समापन से पूर्व महाआरती व 108 हवन कुंडों में आहुति भी दी गई। प्राप्त जानकारी के अनुसार महापूजा को भव्य बनाने में कोई कसर न रहे, इसे लेकर 117 से ज्यादा पंडाल बनाए गए थे। हरेक पंडाल को पूजा समिति की ओर से चिह्नित गांव को दिया गया था। इस दौरान आसपास का पूरा वातावरण हर-हर महादेव के गगनभेदी जयघोष से गुंजरित होता रहा।

मिथिला डायरी

शक्ति और शिव गुरु में ही स्थापित

- गुरुदेव श्री नंदकिशोर श्रीमाली-

गुरु गीता में शिव और शक्ति के बीच वार्तालाप हो रहा है। शक्ति गुरु की महिमा जानना चाह रही हैं और शिव उन्हें ज्ञान दे रहे हैं। देखा जाए तो पास बैठकर लिए गए इस प्रकार के ज्ञान को 'उपनिषद' कहा गया है, परंतु इससे भी अधिक शिव बतला रहे हैं शक्ति से कि गुरु के रूप में मेरा धैर्य और तुम्हारी क्रिया, मेरी शांति, मेरा समत्व और तुम्हारी क्रांति, दोनों एकाकार हो गए हैं। यह जो संसार हमने रचा है, इसमें शक्ति ने अपनी माया से मोह की मात्रा को बढ़ा दिया है, इसलिए आज में कोई चिंता नहीं है, हर एक को कल की चिंता है। कल क्या होगा? क्या कल सुख रहेंगे? क्या कल धन रहेगा? क्या कल स्वास्थ्य रहेगा? क्या कल मेरे संबंधी और मित्रगण रहेंगे?

मनुष्य इन्हीं मौलिक प्रश्नों में इतना उलझा हुआ है कि ज्ञान और जीवन दर्शन उसके लिए बेमानी है। गुरु आते हैं और फिर वह जान पाता है कि उसके सभी प्रश्नों का उत्तर जीवन दर्शन है। गुरु में शिष्य शक्ति और शिव, दोनों को पा लेता है। क्योंकि, दोनों वहीं स्थापित हो गए हैं।

इस संसार में हर व्यक्ति कष्ट में है, जब तक उसे गुरु नहीं मिले हैं। सांसारिक जन सोचते हैं कि उनके दुःख का कारण मनोकामना का अधूरापन है, परंतु वास्तविकता में उनके दुःख का कारण उनका मन है, जिसे हम हमारा मन कहते हैं। यथार्थ में दूसरों का उसके ऊपर अधिकार होता है। जिसका मन चाहता है, वह हमारे मन में अपना कचरा डाल देता है, अपनी बोली का जहर डाल देता है और हम उस विषदंश से दुःखी रहते हैं।

यही कारण है कि आत्मा जब इस संसार में आती है, शिशु सबसे पहले रोता है और जब आत्मा शरीर छोड़कर जाती है, तब बंधु-बांधव रोते हैं। आते और जाते हुए रोना और बीच में कभी-कभी हंसना, यही जीवन का कठोरतम सत्य है। संसार में दुःख, पीड़ा, क्रंदन, विष की भरमार है। हर सुख अपने साथ दुःख छुपाकर लाता है, जो उस सुख को स्थाई बनाने का मोह है। जितना हम सुखों की सुरक्षा के लिए प्रयत्नशील होते हैं, उतना अधिक दुःख का हमारे ऊपर प्रहार करना शुरू होता है। सारा जीवन सुख एवं दुःख के साथ हमारा संबंध 'तू डाल-डाल मैं पात-पात' है, जब तक गुरु का पदार्पण नहीं होता है।

जीवन में गुरु का आना परिवर्तन का काल

गुरु का आना जीवन में परिवर्तन का काल है, संक्रमण का काल है। उनकी कृपा भवसागर की पीड़ा को शोषित करके हमारे जीवन की सम्पदा (नाशवान सुखों) में नया जीवन दे देती है। हमारे जीवन में सभी कुछ नाशवान है। जीवन, यौवन, धन-संपत्ति, सिवाय मोह के। सांसारिक प्राणियों में मोह अमर है। वह धीरे-धीरे बढ़ता है। यताति को इस सत्य का ज्ञान हजार वर्ष बाद हुआ और उन्हें तृष्णा से विरक्ति हुई, परंतु सामान्य जन को सत्य ज्ञान कब होता है? जब गुरु आते हैं, तो वे हमें समर्पण करने के लिए कहते हैं। समर्पण के लिए हमें संसार का मोह गुरु में आरोपित करना होता है। हर प्रार्थना में कहा जाता है-

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव

गुरु के मिलते ही मोह बंधन गुरु में आरोपित कर दिए जाते हैं। मोह की दिशा बदलने के उपरांत जीवन स्वयं श्रेष्ठता की ओर जाने लगता है, क्योंकि संसार का मोह दुःखदायी है, गुरु से मोह सुखदायी है।

न गुरोरधिकं तत्वं न गुरोरधिकं तपः
न गुरोरधिकं ज्ञानं तस्मै श्रीगुरुवे नमः

अधिक और कम की परिभाषा क्या है? किसी लकीर के बगल में से बड़ी लकीर खींच दो तो पहले वाली लकीर छोटी हो जाती है। वहीं दो लकीरें एक समान हों और एक लकीर को थोड़ा मिटा दिया जाए तो दूसरी छोटी बन जाती है। अधिक की परिभाषा हमेशा सापेक्ष है। गुरु की महिमा के इच्छुक जनों को पहले यह जानना होगा।

सात समुंदर मसि करो
लेखनि सब बनराय
धरती सब कागद करो
हरि गुण लिखा न जाए

गुरु एवं हरि के बीच कोई भेद नहीं है। कुण्डलिनी शक्ति गुरु शक्ति है। कृपा का माध्यम गुरु शक्ति है। यदि दाता गुरु हैं तो फिर इधर-उधर सर पीटने की आवश्यकता क्या है? ज्ञान का स्रोत गुरु हैं। गुरु वाणी ईश्वरीय वाणी है। गुरु मंत्र भव बाधाओं का तारणहार है।

भगवत गीता भी गुरु गीता है। जगद्गुरु श्रीकृष्ण जगत के सभी अर्जुनों का मोह नाश कर रहे हैं।

यत्र योगेश्वर कृष्णो यत्र पार्थो
धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा
नीतिर्मतिमम।।

जहां गुरु गीता का प्रवचन बहे, वहां विजय अवश्य है।

गुरु आपके प्रतिद्वंद्वियों को छोटा नहीं करते हैं, बल्कि आपको या कला सिखाते हैं कि आप कैसे बड़े बन जाएं। गुरु से भेंट करना उनके चरणों में शीश नवाना और उनकी आज्ञा का अनुसरण करना आपके अंदर आत्मा क्रांति का बीज होता है। जब आप स्वयं समर्थ और सक्षम हो जाते हैं, तब बाधाएं आपको डरा नहीं सकती हैं।

मन्नाथ श्री जगन्नाथो मद्गुरुः श्री
जगद्गुरुछः
मामात्मा सर्वभूतात्मा तस्मै श्री गुरुवे
नमः।।

ज्ञान हमेशा अन्तरक्रांति के बाद मिलता है। ज्ञान का अर्थ कुण्डलिनी का जागरण एवं उत्थान है। इस हेतु शक्तिपात किया जाता है। समझने की बात है कि एक ओर ईश्वरीय अच्छा है और दूसरी ओर मनुष्य की इच्छा है। हमारी इच्छा ईश्वरीय इच्छा के अधीन हो या उसके अनुरूप हो तो जीवन में सुख का द्वार खुल जाएगा। अन्यथा अप्राप्ति हमें नर्क की ओर धकेल देगी। कुछ ऐसी स्थिति है, मानो मिलेगा कुछ और मांग कुछ और रहे हैं। जब तक मांग और पूर्ति में तालमेल नहीं है, कृपा अमृत आपकी झोली तक किस प्रकार आएगा? दूसरा जिसका पात्र खाली नहीं है, जिसका मन हल्का नहीं है, उसे प्राप्त कैसे होगा?

निर्मल, स्वच्छ मन अंतरात्मा को अनुभवों की स्मृतियों से धो-पोंछकर मिल जाता है। ज्ञान का उद्भव वस्तुतः अज्ञान की अमावस्या, अंधेरेपन में एकाग्रता, संतोष और संयम के दीपक जलाने के बाद आरंभ होता है। बड़ी-बड़ी पुस्तकों, कठिन मंत्रों में ज्ञान नहीं है, बल्कि ज्ञान सादगी और सरलता है। आडम्बर विहीनता ज्ञान है। ऐसा ज्ञान, जिसमें हृदय बंजर रहे और उसमें प्रेम अंकुर नहीं फूटे, वह ज्ञान खोखला है।

गुरु रादिनादिश्च गुरुः परमदैवतम्।
गुरु मंत्रसमोनास्ति तस्मै श्रीगुरुवे
नमः।।

ईश्वर, परमब्रह्म, ऊँकार, विश्वात्मा को किसी ने सत्य और शिव में देखा तो किसी ने क्रिया रूपी शक्ति में देखा। कुछ ऐसे भी थे, जिन्हें शिव-शक्ति मात्र मूर्ति लगे। जिन्हें जीवन्त व्यक्तित्व में ईश्वर के दर्शन करने थे, उन्हें गुरु में शिव एवं शक्ति दोनों मिल गए। आदि और अंत, दोनों का दर्शन गुरु में प्राप्त हुआ।

जाकी रही भावना जैसी
प्रभु मूरत देखी तिन तैसी

भावना से ही गुरुशक्ति बलवती होती है। शिष्य जितना अधिक गुरु के प्रति समर्पित रहता है, वह अपनी भावना-शक्ति में उसी अनुपात में बल प्रदान करता है। सच यह है कि गुरु हमेशा अपने शिष्य के उज्जवल भविष्य के लिए क्रियाशील रहते हैं।

(साभार : निखिल मंत्र विज्ञान)

गुरुगीता रहस्य : शिव-पार्वती संवाद

मेष (चू चे चो ला ली लू ले लो आ) - स्वास्थ्य में कुछ सुधार। नए कार्यों के योग। मानसिक व्याकुलता बढ़ सकती है। रुके कार्यों में गति मिलेगी। मित्रों से मुलाकात। यात्रा के योग बनेंगे।

वृष (ई उ ए ओ वा वी वू वे वो) - स्वास्थ्य पर मौसम के असर हो सकते हैं। वाणी पर संयम रखें। प्रतिष्ठा पर आलोचना के असर होंगे। भाग्योदय में बाधा। शत्रुओ से सावधानी बरतें। स्थान परिवर्तन योग भी बन सकते हैं।

मिथुन (का की कू घ ङ छ के को हा) - स्वास्थ्य के प्रति सजग रहें। अपच की समस्या हो सकती है। वाणी पर संयम रखें। मन में कोई बोझ सता सकती है। शत्रुओं पर विजय। सन्तान पक्ष से अच्छे समाचार प्राप्त होंगे।

कर्क (ही हू हे हो डा डी डू डे डो) - मन व्याकुल रहेगा। अचल सम्पत्ति के विचार बन सकते हैं। कुछ कार्यों में असफलता। शत्रुओं से समन्वय बनाकर रखें।

सिंह (मा मी मू मे मो टा टी टू टे) - स्वास्थ्य में सुधार। घर में सुखपूर्वक जीवन व्यतीत होंगे। स्त्री के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है। पदोन्नति या व्यवसाय में वृद्धि होगी। फिजूल-खर्ची से बचें।

कन्या (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो) - स्वास्थ पर ध्यान दें। नस सम्बन्धी समस्या से बचें। राज्याधिकारियों से मुलाकात। यश और आनन्द की प्राप्ति। धनागम के योग बनेंगे। पराक्रम में बढ़ोत्तरी। भाग्योदय के योग बनेंगे।

तुला (रा री रु रे रो ता ती तू ते) - स्वास्थ्य पर ध्यान दें। चित्त में चंचलता। नींद में बाधा। कार्यों में सफलता के योग। उच्चाधिकारी प्रसन्न होंगे। सुख-आनन्द की प्राप्ति।

वृश्चिक (तो ना नी नू ने नो या यी यू) - मानसिक भ्रम उत्पन्न हो सकता है। शारीरिक और मानसिक शक्ति में कमी आ सकती है। वाणी पर संयम रखें। धनहानि होगी। उच्चाधिकारियों से अनबन हो सकती है।

धनु (ये यो भा भी भू धा फा ढा भे) - स्वास्थ्य में थोड़ी गड़बड़ी हो सकती है। घरेलू झगड़ों के कारण सुख में कमी हो सकती है। जमीन-जायदाद सम्बन्धी समस्याओं का ध्यानपूर्वक समाधान करें। यात्रा में सावधानी बरतें। साहस में बढ़ोत्तरी। शत्रुओं पर आसानी से विजय।

मकर (भो जा जी खी खू खे खो गा गी) - मानसिक असंतोष। कुटुम्बों से रिश्ते बनाकर चलें। नेत्र-पीड़ा हो सकती है। विद्या की हानि। सज्जनों एवं उच्चराज्यधिकारियों से मुलाकात। व्यय अधिक हो सकते हैं।

कुम्भ (गू गे गो सा सी सू से सो दा) - स्वास्थ्य पर ध्यान दें। मन मे भय का माहौल रहेगा। यात्रा के योग। उत्तम भोजन, वस्त्र और शय्या-सुख। उपहारादि धन की प्राप्ति होगी।

मीन (दी दू थ झ दे दो चा ची) - किसी भी कार्य को सोच-विचारकर ही निर्णय लें। कार्यों में सफलता। मित्रों एवं सम्बंधियों से रिश्ते बनाने की कोशिश करें। किसी नए कार्य को करने से परहेज करें।

'मैं नौजवान हूं, पर परेशान हूं!'

'आम तौर पर एक नौजवान काफी ऊर्जावान होता है। उसकी जिंदगी को इस उम्र के पड़ाव से नई दशा-दिशा मिलती है और भविष्य की बुनियाद तय होती है। लेकिन, मैं इस मामले में शायद भाग्यहीन हूं। मेरा जन्म तो आंदोलनों और संघर्षों की परिणति रहा, परंतु जन्म से लेकर आज तक मैं अपनों की धोखेबाजी और राजनीतिक उथल-पुथल का ही शिकार बना रहा। मेरी गोद में प्राकृतिक संसाधनों की भरमार है। रत्नगर्भा होने के बावजूद महज सियासत और लूट-खसोट ने मुझे आज इस मोड़ पर ला खड़ा कर दिया है कि आज भी मेरा भविष्य सुरक्षित नजर नहीं आ रहा औऔ यही मेरी परेशानी का कारण है।'

यह व्यथा है झारखंड की। 22 साल के उस नौजवान प्रदेश की, जिसका निर्माण बड़ी ही उम्मीदों के साथ हुआ था। लेकिन, इसके साथ ही सृजित उत्तराखंड और छत्तीसगढ़ राज्यों की अपेक्षाकृत स्थिति यहां की तमाम स्थितियां बयां करने के लिए काफी है। शुरू से ही यहां केवल येन-केन-प्रकारेण सत्ता पाने और प्राकृतिक संसाधनों की लूट-खसोट का ही खेल चलता रहा है। राज्य के विकास को लेकर सकारात्मक सोच की बजाय दल-बदल और तख्ता पलट में ही हमारे यहां के सियासतदां व्यस्त रहे। यही कारण है कि मात्र 22 साल के भीतर इस राज्य ने 14 मुख्यमंत्री देख लिए। यह सियासी खींचातान और सत्तासुख की लड़ाई का ही नतीजा रहा कि इन 22 वर्षों में केवल एक सीएम रघुवर दास (भाजपा) का कार्यकाल ही पांच वर्षों तक चल सका। वर्तमान हेमंत सरकार (झामुमो-कांग्रेस) भी इस रास्ते पर गतिशील है। तीन-तीन बार तो राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू रहा, जो यहां की राजनीतिक अस्थिरता का परिणाम रही।

राज्य गठन के बाद बाबूलाल मरांडी 15 नवंबर 2000 से लेकर 18 मार्च 2003 तक तीन साल के लिए इस राज्य के प्रथम मुख्यमंत्री रहे। इसके बाद अर्जुन मुंडा 2 साल के लिए मार्च 2003 से 2005 तक सीएम बने। फिर 2 मार्च 2005 से 12 मार्च 2005 तक शिबू सोरेन मात्र 10 दिन के लिए मुख्यमंत्री बने। इसके बाद अर्जुन मुंडा मात्र एक वर्ष, मधु कोड़ा 2006 से 2008 तक दो साल और शिबू सोरेन फिर एक साल के लिए मुख्यमंत्री बने। मधु कोड़ा का कार्यकाल क्या रहा और किस कदर घोटालों का इतिहास राष्ट्रीय कुख्याति बनी, यह जगजाहिर है। फिर एक साल 10 दिन के लिए वर्ष 2009 में राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू रहा। शिबू सोरेन फिर एक साल के लिए मुख्यमंत्री बने और 2010 में 1 जून से लेकर 10 सितंबर तक पुनः राष्ट्रपति शासन रहा। अर्जुन मुंडा तीन वर्षों के लिए 2010 से 2013 तक मुख्यमंत्री रहे और राज्य में लगभग सात महीने के लिए 2013 में तीसरी बार राष्ट्रपति शासन लागू रहा। तत्पश्चात एक वर्ष के लिए हेमंत सोरेन को पुनः मुख्यमंत्री की गद्दी मिली। तत्पश्चात 28 दिसंबर 2014 से 28 दिसंबर 2019 तक रघुवर दास ने पांच वर्षों का कार्यकाल पूरा किया। 29 दिसंबर 2019 से हेमंत सोरेन राज्य के मुखिया का दायित्व बखूबी संभाल रहे हैं। हालांकि, हाल के दिनों में जिस कदर विधायक खरीद-फरोख्त, कोलकाता में कैशकांड और ईडी-आईटी की रेड में जो खुलासे हो रहे हैं, वह भी राज्य के विकास से ज्यादा नेताओं के अपने विकास की प्राथमिकता जाहिर कर रही है।

बीते दो दशक में यकीनन विकास के कई नए आयाम जुड़े हैं, परंतु अपेक्षाकृत विकास की बाट आज भी यह प्रदेश जोह रहा है। उद्योगों के मामले में तो झारखंड निश्चित तौर पर धनी है, परंतु शिक्षा, स्वास्थ्य से जुड़े काम आज भी उम्मीदों की कसौटी पर खरा नहीं उतर सके हैं। बेरोजगारी के चलते राज्य से हरसाल हजारों युवक परदेस पलायन कर रहे हैं। इस चक्कर में आए दिन उनकी वहां मौत की घटनाएं भी सामने आती रहती हैं। सच कहें, तो सरकारी योजनाएं ही राज्य में इतनी हैं कि अगर पूरी ईमानदारी के साथ अगर अधिकारी वर्ग के लोग उन्हें क्रियान्वित करें, तो बेरोजगारी के साथ-साथ विकास के भी नए अध्याय जुड़ सकेंगे। लेकिन, हर जगह भ्रष्टाचार और चढ़ावा की पुरानी परिपाटी आजतक हमारे सिस्टम के लिए जंग बनी है और यही विकास में सबसे बड़ा रोड़ा है। खैर... अब भी ज्यादा कुछ नहीं बिगड़ा। राज्य गठन की इस 21वीं वर्षगांठ पर इस दिशा में सभी को संकल्पित होने की जरूरत है। विकास में आमलोगों की भी भागीदारी उतनी ही जरूरी है जितनी अधिकारियों की। बिना जनसहयोग के कोई भी योजना सही तरीके से मूर्त रूप नहीं ले सकती। नेताओं को खास तौर से ध्यान देने की जरूरत है। कम से विकास के नाम पर तो वे राजनीति न करें। जब सभी सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ेंगे, तो निश्चय ही भगवान बिरसा की इस धरती को हम विकसित और खुशहाल बना सकेंगे।

- प्रस्तुति : गंगेश

गुदगुदी

टीचर : भोलू तुम परिंदों के बारे में सब जानते हो?

भोलू : जी हां...

टीचर : जरा बताओ कौन-सा परिंदा उड़ नहीं सकता?

भोलू : टीचर, वो मरा हुआ परिंदा...!!

पप्पू मंत्री से : नेताजी पढ़ाई नहीं हो पा रही। बिजली नहीं आती।

मंत्री : पीए से बात करके कुछ इंतजाम करता हूं।

पप्पू: बिजली का? **मंत्री** : नहीं डिग्री का!

पेज- एक का शेष

बनाकर केन्द्र सरकार को लपेटे में लिया जा सके। जानकारों की मानें, तो स्थानीय नीति लागू होने से जमशेदपुर में तो पूरा शहर ही टाटा स्टील का हो जाएगा, क्योंकि 1932 में जमशेदपुर शहर की करीब 24 हजार बीघा जमीन का रैयतदार टाटा स्टील था। बिहार सरकार ने 1956 में बिहार भूमि सुधार अधिनियम लागू किया तो जमींदारी प्रथा खत्म हो गई। टाटा स्टील की जमीन का मालिक बिहार सरकार हो गई और टाटा को यह जमीन लीज पर दी गई। अगर 1932 का खतियान लागू हुआ तो शहर की पूरी जमीन का स्वामित्व टाटा स्टील का हो जाएगा। बस संथाल परगना में 1932 के खतियान को आधार नहीं बनाया जा सकेगा, क्योंकि वहां अंतिम सर्वे 1908 में हुआ था। जबकि राज्य के 80 फीसदी क्षेत्रों में 1932 में केडेस्ट्रल सर्वे हुआ था।

चल जंगल चल

चल जंगल चल, चल जंगल चल
जंगल के दिन में गुनगुन है
जंगल की रातों में धुन है
झिंगुर का मीठा है सरगम
ऊँचा-नीचा स्वर, स्वर मध्यम
वन बजता रहता है निरन्तर
नहीं टूटते इस सितार के तार... जंगल
चल जंगल चल, चल जंगल चल

चल जंगल चल, चल जंगल चल
जंगल में संगीत पिरोया
अद्भुत संगीतज्ञ है रोया
जंगल में 'प-म-ग-रे-सा'
जंगल 'ना-धिन-धिन' जैसा
संगीतज्ञ तो जंगल ही है
वेदों से अबतक का लो आधार... जंगल
चल जंगल चल, चल जंगल चल (क्रमशः)

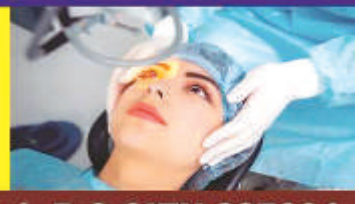

कुमार मनीष अरविन्द

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी विजय कुमार झा द्वारा दामिनी प्रिन्टर्स, जेब्री.- 12, सिटी सेन्टर, सेक्टर-4, बोकारो से मुद्रित एवं सेक्टर-3बी/94, बोकारो स्टील सिटी (झारखंड) से प्रकाशित। **संपादक : विजय कुमार झा***
प्रबंध संपादक : **कंचन झा**, दिल्ली ब्यूरो : **श्रवण कुमार झा**, फोन/फैक्स : (06542) 246899, E-mail : mithilavarnan@gmail.com, आरएनआई. पंजीयन संख्या : 48973/89 (*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिये जिम्मेवार)

आसियान शिखर सम्मेलन - मजबूत होगी भारत की रणनीतिक साझेदारी

ब्यूरो संवाददाता

नई दिल्ली : कंबोडिया के तीन दिवसीय दौरे पर गए उपराष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ ने आज कंबोडिया के नोम पेन्ह में 19वें आसियान-भारत शिखर सम्मेलन में विदेश मंत्री डॉ. एस जयशंकर सहित भारतीय प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व किया। अपने प्रारंभिक संबोधन में, उपराष्ट्रपति ने प्राचीन काल से भारत और दक्षिण पूर्व एशिया के बीच मौजूद गहरे सांस्कृतिक, आर्थिक और सभ्यतागत संबंधों की सराहना की। उन्होंने कहा कि भारत-आसियान संबंध भारत की एक्ट-ईस्ट नीति का केंद्रीय स्तंभ है। उन्होंने भारत-प्रशांत क्षेत्र में आसियान की केंद्रीय भूमिका के लिए भारत के समर्थन को दोहराया। शिखर सम्मेलन में, आसियान (दक्षिण-पूर्व एशियाई राष्ट्र संघ) और भारत ने व्यापक रणनीतिक साझेदारी के लिए मौजूदा रणनीतिक साझेदारी को और मजबूत करने की घोषणा करते हुए एक संयुक्त बयान जारी किया। दोनों पक्षों ने भारत-प्रशांत क्षेत्र में शांति, स्थिरता, समुद्री सुरक्षा और नेविगेशन की स्वतंत्रता और ओवरफ्लाइट को बनाए रखने और बढ़ावा देने के महत्व की पुष्टि की।

आतंकवाद से मुकाबले में सहयोग की प्रतिबद्धता

पीआईबी सूत्रों के अनुसार उक्त सम्मेलन के दौरान संयुक्त वक्तव्य में विभिन्न क्षेत्रों जैसे कि समुद्री गतिविधियों, आतंकवाद का मुकाबला, अंतर्राष्ट्रीय अपराध, साइबर सुरक्षा, डिजिटल अर्थव्यवस्था, क्षेत्रीय संपर्क, स्मार्ट कृषि, पर्यावरण, विज्ञान और प्रौद्योगिकी, पर्यटन जैसे विभिन्न क्षेत्रों में भारत-आसियान सहयोग बढ़ाने की प्रतिबद्धता भी दोहराई गई। संयुक्त वक्तव्य में आसियान-भारत व्यापार समझौते (एआईटीआईजीए) की समीक्षा में तेजी लाने का भी प्रस्ताव है ताकि इसे अधिक उपयोगकर्ता-अनुकूल, सरल और व्यापार के लिए सुविधाजनक बनाया जा सके।

बाद में, उपराष्ट्रपति ने रॉयल पैलेस में कंबोडिया के महामहिम राजा नोरोडोम सिहामोनी से मुलाकात की और सांस्कृतिक सहयोग को तेज करने के तरीकों सहित भारत-कंबोडिया संबंधों पर चर्चा की।

उपराष्ट्रपति ने विदेश मंत्री डॉ. एस जयशंकर के साथ कंबोडिया के प्रधानमंत्री श्री हुन सेन के साथ बैठक की। उपराष्ट्रपति ने मानव संसाधन, डी-माइनिंग और विकास परियोजनाओं सहित द्विपक्षीय संबंधों पर व्यापक चर्चा की। नतीजतन, संस्कृति, वन्य जीवन और स्वास्थ्य के क्षेत्रों में दोनों देशों के बीच चार समझौता ज्ञापनों और समझौतों का आदान-प्रदान किया गया। उपराष्ट्रपति, जो राज्य सभा के सभापति भी हैं, ने बाद में कंबोडिया के सीनेट के अध्यक्ष, श्री साय चुम से मुलाकात की और प्रशिक्षण कार्यक्रमों सहित दोनों देशों के सांसदों के बीच संबंधों को मजबूत करने पर चर्चा की।

श्री धनखड़ ने नोम पेन्ह में राष्ट्रीय संग्रहालय का दौरा किया और खमेर कला के कार्यों को देखा। एक संदेश में, उन्होंने उस कलाकृति की सराहना की जो 'पुराने समय से भारत और कंबोडिया के बीच घनिष्ठ सभ्यतागत संबंधों को दशार्ती है'। उपराष्ट्रपति ने अपनी पत्नी डॉ. सुदेश धनखड़, डॉ. एस. जयशंकर और अन्य लोगों के साथ कंबोडिया के प्रधानमंत्री द्वारा आयोजित एक सांस्कृतिक कार्यक्रम और रात्रिभोज में भाग लिया। आसियान-भारत शिखर सम्मेलन के दौरान उपराष्ट्रपति ने वियतनाम के महामहिम प्रधानमंत्री श्री फाम मिन्ह चिन से मुलाकात की। दोनों पक्षों ने अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में व्यापार, अर्थव्यवस्था, सुरक्षा, संस्कृति और तालमेल के क्षेत्रों में एक साथ काम करने के लिए पारस्परिक प्रतिबद्धता की पुष्टि की।